9-4

अंधकार से ज्योति

अंधकार से ज्योति

Project Philip Lesson
(Hindi)
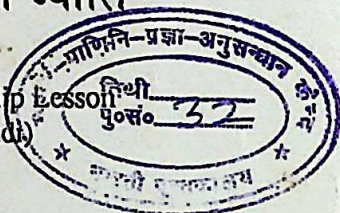
1981-2,00,000 Copies
1982-1,00,000 Copies
1983-1,00,000 Copies
1984-2,00,000 Copies
1985-3,00,000 Copies
1986-6,00,000 Copies
1988-1,00,000 Copies
1989-2,00,000 Copies
1990-3,00,000 Copies
1991-2,00,000 Copies
1992-3,00,000 Copies
1993-1,00,000 Copies
1993-3,00,000 Copies

Published by:

India Bible Literature
Post Bag 1037, Kilpauk, Madras 600010

इण्डिया बाईबल लिटरेचर
नं० ६७, बरक्का रोड़
कीलपक, मद्रास-६०० ०१०

परमेश्वर कौन है?

आपने क्या कभी सोचा है कि परमेश्वर कौन है? और क्या कभी सोचा है कि संसार की सारी वस्तुओं को किसने बनाया है? किसने पेड़ों की सृष्टि की? तारों को किसने बनाया?

बाइबल हमें बतलाती है कि इन सभी चीजों को परमेश्वर ने बनाया है। परन्तु परमेश्वर कौन है? बाइबल हमें बतलाती है कि परमेश्वर सदा जीवित है। कुछ वर्ष पहले आपने इस जीवन का आरंभ किया। तब आपका ज़न्म हुआ था। आप एक नन्हे बालक थे परन्तु परमेश्वर ने जीवन का आरंभ कभी नहीं किया। वे हमेशा जीवित हैं।

किसी दिन हम और आप मर जायेंगे। सब की मृत्यु होगी। परन्तु परमेश्वर कभी नहीं मरेंगे। वे हमेशा जीवित हैं, वे कभी मरेंगे नहीं।

परमेश्वर ने सारी वस्तुओं की सृष्टि की

बाइबल हमें यह बतलाती है कि परमेश्वर ही वह व्यक्ति है जिसने संसार की सारी वस्तुओं को बनाया। उसने तारों को, सूर्य को, सभी पेड़ों को और सभी फूलों और पक्षियों को बनाया। संसार में कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे परमेश्वर ने नहीं बनाया।

कैसे परमेश्वर ने सब कुछ बनाया?

कैसे परमेश्वर ने संसार और उसकी वस्तुओं को बनाया? बाइबल हमें बतलाती है कि उसने केवल कहा और सब कुछ हो गया। क्या आपने कभी साईकिल की इच्छा की है? केवल साईकिल की इच्छा करना ही आपके लिये काफी नहीं है। आप केवल इच्छा करके वस्तुओं को नहीं पा सकते हैं।

परन्तु परमेश्वर इतना सामर्थी है कि उसने संसार की इच्छा की और वह हो गया। बाइबल बतलाती है कि परमेश्वर ने कहा या आज्ञा दी और हो गया। उसने लकड़ी या ईंट का प्रयोग भी चीजों को बनाने में नहीं किया।

क्या परमेश्वर ने सारी चीजें एक साथ बनायीं?

बाइबल बतलाती है कि परमेश्वर ने सब कुछ एक साथ नहीं बनाया। कृपया बाइबल के खंड को पढ़ें जो इस पाठ से संबंधित है: यह उत्पत्ति (बाइबल की प्रथम पुस्तक) के प्रथम अध्याय एक से तेरह पदों से लिया गया है। परमेश्वर ने भिन्न-भिन्न चीजों की सृष्टि भिन्न-भिन्न दिनों में की।

प्रथम दिन में परमेश्वर ने कहा कि उजियाला और अन्धकार हो जा। इसके पहले सब कुछ अन्धकार था। परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो जा"! और उजियाला चमकने लगा!

दूसरे दिन परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।
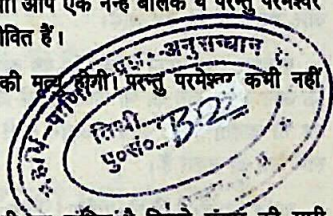
तीसरे दिन

तीसरे दिन परमेश्वर ने पृथ्वी पर दृष्टि करके देखा कि जमीन और पानी मिले हुए हैं। इसलिये उसने आज्ञा दी कि पानी झील, नदी एवं समुन्द्र में इक्ट्ठा हो जाये।

सूखी भूमि निकल आयी और परमेश्वर ने आज्ञा दी कि उस पर घास और पेड़ उग आयें। और घास और पेड़ उग आये।

परमेश्वर एक महान व्यक्ति है। वह आपको बहुत अधिक प्यार करता है। वह चाहता है कि आप अगले पाठ का भी अध्ययन करें कि कैसे परमेश्वर ने दुनियां की सृष्टि की। और वह यह भी चाहता है कि आप अध्ययन करते चलें ताकि यह जान सकें कि आप उसके साथ स्वर्ग कैसे जा सकते हैं।

प्रार्थना करने के लिये प्रार्थना! पिता, संसार बनाने के लिये आपको धन्यवाद! मेरी सहायता कर कि मैं आपके बारे में अधिक जान सकूं। आमीन।

उत्पत्ति १:१-१३

१. आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।
२. और पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी, और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था; तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था।
३. तब परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो", और उजियाला हो गया।
४,५. और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है: और परमेश्वर ने उजियाले को अन्धियारे से अलग किया। और परमेश्वर ने उजियाले को दिन और अन्धियारे को रात कहा। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहिला दिन हो गया।
६. फिर परमेश्वर ने कहा, "जल के बीच एक ऐसा अन्तर हो कि जल के दो भाग हो जाएं"।
७,८. तब परमेश्वर ने एक अन्तर करके उसके नीचे के जल और उसके ऊपर के जल को अलग-अलग किया; और वैसा ही हो गया। और परमेश्वर ने उस अन्तर को आकाश कहा। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार दूसरा दिन हो गया।
९,१०. फिर परमेश्वर ने कहा, " आकाश के नीचे का जल एक स्थान में इक्ट्ठा हो जाए और सूखी भूमि दिखाई दे" और वैसा ही हो गया। और परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथ्वी कहा, तथा जो जल इक्ट्ठा हुआ उसको समुंद्र कहा; और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।
११,१२. फिर परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी से हरी घास, तथा बीज वाले छोटे-छोटे पेड़, और फलदाई वृक्ष भी जिनके बीज उन्हीं में एक-एक की जाति के अनुसार होते हैं,

पृथ्वी पर उगें"; और वैसा ही हो गया। तो पृथ्वी से हरी घास, और छोटे-छोटे

पेड़ जिनमें अपनी-अपनी जाति के अनुसार बीज होता है, और फलदाई वृक्ष जिनके बीज एक-एक की जाति के अनुसार उन्हीं में होते हैं उगे; और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।

१३. तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार तीसरा दिन हो गया।

इसे मुखस्थ करें-

"...परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की"।

इस जांच को समाप्त करने के पश्चात्, पाठ दो को करें।

पाठ दो

परमेश्वर अपनी सृष्टि को पूर्ण करता है

क्या आपने कभी तारों को गिनने की कोशिश की है? क्या आप यह कर सकते हैं? नहीं, आप नहीं कर सकते। हमारे गिनने के लिये वे असंख्य हैं। सभी तारे पृथ्वी से काफी दूर हैं। कुछ छोटे हैं कुछ बड़े। एक तारा इतना बड़ा है कि यदि सूर्य और पृथ्वी के मध्य रखा जाय तो पूरे स्थान को घेर ले।

परमेश्वर ने तारों को बनाया।

प्रथम पाठ में हमने परमेश्वर की सृष्टि के प्रथम तीन दिनों का अध्ययन किया। चौथे दिन में परमेश्वर ने सूर्य, चन्द्रमा और तारों को बनाया। उसने कहा और वे आ गये। सूर्य चमका और पृथ्वी को गर्मी दी। उसने शांत पानी की चमक और घास को अधिक हरियाला बनाया। यह सब कुछ सुन्दर, शांत था।

पांचवा दिन

पांचवे दिन में परमेश्वर ने कुछ विशेष चीजों को बनाया। प्रथम, उसने समुद्रों और झीलों को देखा और कहा कि वे मछलियों से भर जायें। बड़ी मछलियां और छोटी मछलियां। ह्वेल और छोटी मछलियां।

और परमेश्वर ने वायु मण्डल को देखा और आज्ञा दी कि वे पक्षियों से भर जायें। सभी तरह के पक्षियों से। क्या तुमने चिड़ियाघर में जा कर भिन्न-भिन्न प्रकार के पक्षियों को देखा है जिन्हें परमेश्वर ने बनाया है? परमेश्वर ने इतने अधिक पक्षी बनाये हैं कि उनके प्रकारों को गिनना मुश्किल है।

परमेश्वर ने वायु मण्डल को पक्षियों से तथा झीलों, नदियों एवं समुद्रों को मछलियों से भर दिया। परन्तु भूमि अब तक खाली थी। इसलिये परमेश्वर ने कुछ जानवरों को बनाया। सभी तरह के जानवर। कुछ ऐसे जानवर भी परमेश्वर ने बनाये जो आज जीवित नहीं हैं। वे डाइनोसौर कहे जाते हैं। इनमें से कुछ बड़े जानवर कई टन पत्ती एवं घास प्रतिदिन खा सकते थे।

जानवरों को बनाने के पश्चात परमेश्वर ने सबसे विशेष चीज की सृष्टि की। परमेश्वर ने हमें बनाया। परमेश्वर ने देखा कि जानवरों में, पक्षियों या मछलियों में कोई ऐसा नहीं जो उससे बातें कर सके। इसलिये उसने मनुष्य को बनाया। आदम और हव्वा पहले व्यक्ति हुए जिन्हें परमेश्वर ने सृजा।

परमेश्वर ने जिन व्यक्तियों को सृजा उन्हें एक आत्मा भी दिया। आपके पास भी एक आत्मा है। मेरे पास एक आत्मा है। यह हमारा एक भाग है जो "परमेश्वर के समान दिखता है"। हम अपनी आत्मा को नहीं देख सकते हैं। चूंकि हमारे पास आत्मा है इसलिये हम परमेश्वर से बात-चीत कर सकते हैं और वह हमसे।

परमेश्वर अत्याधिक महान् है, क्या वह नहीं है? क्या आपने कभी यह महसूस किया कि वह कितना महान् है? उसने संसार की सारी चीजों को बनाया। उसने वे सब सिर्फ हो जाने की आज्ञा देकर बनाया।

क्या आपने कभी दुनिया एवं आपको बनाने को लिये परमेश्वर को धन्यवाद दिया है? क्या आपने कभी सुन्दर फूलों एवं पेड़, पक्षियों एवं जानवरों के लिये परमेश्वर को धन्यवाद दिया है? अभी इसे करें! यह छोटी प्रार्थना करें –

"परमेश्वर आपको संसार और उसकी सुन्दर चीजों को बनाने के लिये धन्यवाद। मुझको बनाने के लिये धन्यवाद। मेरी सहायता कर कि मैं आपसे प्रेम करुं तथा आपके बारे में और सीखूं"।

उत्पत्ति १:१४-३१

१४,१५,१६. फिर परमेश्वर ने कहा, दिन को रात से अलग करने के लिये आकाश के अन्तर में ज्योतियां हों; और वे चिन्हों और नियत समयों और दिनों, और वर्षों के कारण हों। और वे ज्योतियां आकाश के अन्तर में पृथ्वी पर प्रकाश देने वाली भी ठहरें; और वैसा ही हो गया। तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियां बनाईं; उनमें से बड़ी ज्योति को दिन पर प्रभुता करने के लिये और छोटी ज्योति को रात पर प्रभुता करने के लिये बनाया; और तारागण को भी बनाया।

१७,१८,१९. परमेश्वर ने उनको आकाश के अन्तर में इसलिये रखा कि वे पृथ्वी पर प्रकाश दें तथा दिन और रात पर प्रभुता करें और उजियाले को अन्धियारे से अलग करें; और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार चौथा दिन हो गया।

२०. फिर परमेश्वर ने कहा, जल जीवित प्राणियों से बहुत ही भर जाए, और पक्षी पृथ्वी के उपर आकाश के अन्तर में उड़ें।

२१,२२. इसलिये परमेश्वर ने जाति-जाति के बड़े-बड़े जल-जन्तुओं की, और उन सब जीवित प्राणियों की भी सष्टि की जो चलते-फिरते हैं जिनसे जल बहुत ही भर गया और एक-एक जाति के उड़नेवाले पक्षियों को भी सृष्टि की और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। और परमेश्वर ने यह कह के उनको आशीष दी, कि फूलो-फलो, और समुद्र के जल में भर जाओं, और पक्षी पृथ्वी पर बढ़ें।

२३. तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पांचवां दिन हो गया।

२४,२५. फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से एक-एक जाति के जीवित प्राणी, अर्थात् घरेलू पशु, और रेंगनेवाले जन्तु, और पृथ्वी के वनपशु, जाति-जाति के अनुसार उत्पन्न हों; और वैसा ही हो गया। सो परमेश्वर ने पृथ्वी के जाति-जाति के वनपशुओं को, और जाति-जाति के सब घरेलू पशुओं को और जाति-जाति के भूमि पर सब रेंगनेवाले जन्तुओं को बनाया: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।

२६. फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरुप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं और वे समुंद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।

२७. तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरुप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।

२८. और परमेश्वर ने उनको आशीष दी; और उनसे कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुंद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।

२९,३०. फिर परमेश्वर ने उनसे कहा, सुनो, जितने बीजवाले छोटे-छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के उपर हैं और जितने वृक्षों में बीजवाले फल होते हैं, वे सब मैंने तुमको दिये हैं; वे तुम्हारे भोजन के लिये हैं। और जितने पृथ्वी के पशु और आकाश के पक्षी, और पृथ्वी पर रेंगने वाले जन्तु हैं, जिनमें जीवन के प्राण

हैं, उन सबके खाने के लिये मैंने सब हरे-हरे छोटे पेड़ दिये हैं; और वैसा ही हो गया।

३१. तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा कि वह बहुत ही अच्छा है। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार छटवां दिन हो गया।

इसे मुखस्य करें:

"फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरुप और अपनी समानता में बनाएं......"।

उत्पत्ति १:२६

अब तीसरे पाठ को करें।

पाठ तीन

दु.ख भरी कहानी जो हमेशा कही जायेगी

यह एक दुःखभरी कहानी है। वास्तव में यह एक दुःखभरी कहानी है जो हमेशा कही जायेगी। पृथ्वी की सृष्टि के पश्चात् सभी चीजें अति सुन्दर थीं। कोई खराब कीड़ा नहीं था। काटने वाले मच्छर नहीं थे। सभी जानवर दयालु थे।

दो व्यक्तियों को जिन्हें परमेश्वर ने सृजा था बहुत अधिक खुश थे। उनके नाम आदम और हव्वा थे। वे कभी नहीं रोये थे। वे एक दूसरे से प्रेम करते थे तथा परमेश्वर और उसके बनाये संसार से भी प्रेम करते थे। परमेश्वर ने उनको बहुत ही सुन्दर स्थान में रखा था। यह स्थान बाइबल में अदन की बारी कहलाता है।

परमेश्वर एक नियम बनाता है

जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अदन की बारी में रखा तो उसने एक नियम बनाया और उनको उसे मानने को कहा। उसने उनसे कहा कि वे बाग के सभी पेड़ों का फल खा सकते हैं केवल एक को छोड़कर। वहां एक वृक्ष था जिसका फल वे नहीं तोड़ सकते थे। यह वृक्ष भले बुरे के ज्ञान का वृक्ष या विवेक का वृक्ष कहलाता था। परमेश्वर ने सरल रुप से उनसे कह दिया था कि यदि वे उस वृक्ष का फल खायेंगे तो वे जरूर मर जायेंगे।

परमेश्वर ने उनसे प्रतिज्ञा भी की कि यदि वे उस वृक्ष का फल नहीं खायेंगे तो सनातन तक जीवित रहेंगे। आदम-हव्वा ने आरंभ में परमेश्वर की आज्ञा मानी और वे बहुत अधिक खुश थे। वे ऐसा कुछ नहीं करना चाहते थे जिससे परमेश्वर अप्रसन्न हो।

बाग में एक मुलाकाती

एक समय शैतान अदन के बाग में आया। क्या आप जानते हैं कि शैतान है कौन? शैतान एक गिराया हुआ स्वर्गदूत है जो परमेश्वर के विरूद्ध युद्ध करता है। संसार को बनाने से पहले परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को बनाया। हम स्वर्गदूतों को नहीं देख सकते हैं क्योंकि उनके पास हमारी नाई शरीर नहीं है। उनमें से कुछ स्वर्गदूत खराब निकले। इसलिये परमेश्वर ने उन्हें स्वर्ग से निकाल दिया।

शैतान इन सभी बुरे स्वर्गदूतों का सरदार है। वह परमेश्वर और परमेश्वर की सुन्दर सृष्टि से घृणा करता है। वह परमेश्वर, संसार और हमें नष्ट करना चाहता है। वह सभी को दुःखी एवं अभागा बनाना चाहता है। वह ये सब हमें पाप में गिरा कर कराना चाहता है।

शैतान हव्वा से मिलता है

शैतान अदन की बारी में आदम हव्वा को पाप में गिराने की कोशिश करने आता है। वह एक सांप का रूप धारण कर हव्वा से मिलता है तथा उससे बात-चीत करता है। उसने हव्वा से कहा कि परमेश्वर ने उससे झूठ कहा है। उसने उससे कहा कि यदि वह पाप करे या परमेश्वर की आज्ञा न माने तो वह मरेगी नहीं। वह परमेश्वर के समान हो जायगी। शैतान से हव्वा से कहा कि यदि वह वास्तव में प्रसन्न रहना चाहती है तो परमेश्वर की आज्ञा न माने।

हव्वा ने उस भयंकर झूठ का विश्वास किया। उसने मना किये गये वृक्ष से कुछ फल तोड़कर खाए। तब उसने कुछ फल तोड़ कर आदम के पास लाए और उन दोनों ने उसे खाया।

तुरंत ही वे बहुत अधिक दुःखी बन गये। वे अपने को परमेश्वर से छिपाने की कोशिश करने लगे। वे परमेश्वर से कभी आगे बात चीत करना नहीं चाहते थे।

आदम और हव्वा के समान हम सभी प्रायः दुःखित रहते हैं। हमने पाप किया है और परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी है। अगले पाठ में हम आदम हव्वा के पाप के कारण भयंकर परिणामों के विषयों में सीखेंगें।

उनको परमेश्वर ने पाप से बचाने के लिये जो अद्भुत प्रतिज्ञा दी है उसके विषय में भी पढ़ोगे।

परमेश्वर की आज्ञा उल्लंघन करने पर भी आपको क्षमा मिल सकती है। क्यों नहीं आप उससे अभी क्षमा के लिये कहते हैं? उससे मांगिये कि वह आपको अच्छा और आज्ञाकारी बनाए।

प्रार्थना

प्यारे परमेश्वर, मैंने आपके विरुद्ध पाप किये हैं। मुझे क्षमा करें। मुझे एक भला व्यक्ति

बनायें। मेरी सहायता करें कि मैं आपकी आज्ञा मानूं तथा आपको प्यार करूं। यीशु के लिये, आमीन।

उत्पत्ति ३:१-७

१. यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाये थे, उन सब में सर्प धूर्त था, और उसने स्त्री से कहा, क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम बाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?

२,३. स्त्री ने सर्प से कहा, " इस बाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं। पर जो वृक्ष बाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे"।

४. तब सर्प ने स्त्री से कहा, "तुम निश्चय न मरोगे।

५. वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखे खुल जायेंगी, और तुम भले-बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे"।

६. सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है तब उसने उसमें से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया।

७. तब उन दोनों की आंखें खुल गयीं, और उनको मालूम हुआ कि वे नंगे हैं; सो उन्होने अंजीर के पत्ते जोड़-जोड़ कर लंगोट बना लिये।

इसे मुखस्य करें:

"तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन से प्रेम रखना......."।

मत्ती २२:३७

अब पाठ चार करें।

पाठ चार

परमेश्वर की अद्भुत प्रतिज्ञा

आदम और हव्वा परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानने के बाद कितने दुःखी थे। इसके पहले वे परमेश्वर से बातें करने से प्रसन्न होते थे। अब वे उससे डरते थे और जब परमेश्वर उनसे बातें करने आये तो वे उससे छिप गये।

परमेश्वर ने उनको आवाज दी उन्होंने झाड़ियों में छिपे हुए उसको उत्तर दिये। परमेश्वर ने उनसे पूछा कि क्या चीज उन्हें तकलीफ दे रही है। आदम ने कहा कि उसके पास पहनने को एक भी कपड़ा नहीं है इसलिये वह छिपा है। आपने देखा, परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानने से

पहले आदम, हव्वा एक भी कपड़ा नहीं पहनते थे, परन्तु वे शर्माते नहीं थे। परन्तु जब उन्होंने पाप किया, वे शर्माने लगे।

बाग से बाहर निकाल दिया जाना

परमेश्वर जानते थे कि उन्होंने पाप किया है। वे बहुत अधिक दु:खित थे। परन्तु उसने उनको बतलाया था कि पाप का परिणाम क्या होगा। शैतान ने आदम-हव्वा से कहा था कि परमेश्वर ने तुमसे झूठ कहा है कि यदि तुम आज्ञा नहीं मानोगे तो मरोगे। परन्तु परमेश्वर ने झूठ नहीं कहा था।

परमेश्वर ने आदम-हव्वा के पाप के भयंकर परिणामों को बतलाया जो होने वाले हैं। उसने आदम से कहा कि भूमि से उंटकटार उगेगी तथा जब वह काम करेगा तब बहुत अधिक थकेगा। उसने हव्वा से कहा कि उसे बहुत तकलीफ और दर्द सहना पड़ेगा। उसने उनको अदन की बारी को हमेशा के लिये छोड़ देने को कहा! उसने कहा कि वे मरेंगे! उसने दो स्वर्गदूतों को बाग के फाटक के पास पहरेदारी के लिये रखा!

परमेश्वर की महान् प्रतिज्ञा

आदम और हव्वा ने बारी छोड़ दी। उसके बाद से मनुष्य हमेशा दुखि:त हैं। दुनिया में रोना और लड़ाई झगड़ा ही है। मनुष्य एक दूसरे को मार डालना चाहता है। मनुष्य नीच और अनुज्ञाकारी है। दुनिया के सारे दु:खों का एक मात्र कारण पाप ही है। आप हमेशा पाप के कारण ही लड़ाई और झगड़े करते हैं। आप पाप के कारण ही रोते हैं।

परमेश्वर ने आदम, हव्वा से एक अद्‌भुत प्रतिज्ञा की। उसने कहा कि यह हमेशा ऐसा ही खराब नहीं रहेगा। उसने कहा कि किसी दिन पाप दुनिया से ले लिया जायेगा। उसने उनसे कहा कि वे अपने पुत्र यीशु को दु:ख उठाने और मरने के लिये भेजेंगे। यीशु एक बालक की नाई जन्म लेगा। वह एक मनुष्य की नाई बढ़ेगा, और तब वह क्रूस पर मरेगा।

परमेश्वर हमें बतलाता है कि यदि हम यीशु पर विश्वास लायें तो हम मरेंगे नहीं। जब हमारा शरीर मरेगा, वह हमारी आत्मा को परमेश्वर के साथ रहने के लिये स्वर्ग ले जायेगा और तब किसी दिन वह फिर आयेगा। तब हमें नया शरीर मिलेगा और यीशु संसार के सारे पापों को दूर करेगा।

उस समय कोई रोना न दु:ख न पीड़ा रहेगी। लोग एक दूसरे को प्यार करेंगे तथा हम परमेश्वर को और पूरे रूप से प्यार करने लगेंगे। केवल वे ही लोग इस स्थान में जो स्वर्ग कहलाता है, रहेंगे, जो यीशु से प्रेम करते हैं तथा उस पर विश्वास करते हैं। जो यीशु से प्रेम नहीं रखते उन्हें नर्क भेज दिया जायेगा।

यदि हम यीशु को अपने मुक्तिदाता के रुप में स्वीकार करें, और प्रार्थना करें, तो वह हमें

भला बनने में सहायता करेंगे। और जैसे-जैसे हम परमेश्वर की आज्ञा मानेंगे हम खुश रहेंगे। क्या आप यीशु पर विश्वास करते हैं? यदि आपने कभी उसे अपने हृदय में नहीं बुलाया है तो क्या आप अभी करेंगे?

यह प्रार्थना करें–यीशु, मैंने पाप किया है तथा अनेक गलत काम किये हैं। जैसा आपको प्यार करना चाहिये मैंने नहीं किया। कृपा करके मुझे क्षमा करें तथा मेरे हृदय में आयें। मैं विश्वास करता हूं कि आप मुझे बचाने को मरें। आज्ञा मानने में मेरी सहायता करें। आपके नाम से आमीन।

इन सभी जांच पत्रों को पीछे दिये गये पते पर भेजें। हम उन्हें जांचेंगे और आपके पास अगली पुस्तिका भेज देंगे।

१. "क्योंकि परमेश्वर ने जगत् से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाये"। यूहन्ना ३:१६
२. "तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते; तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करुं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो"। यूहन्ना १४:१-३ यीशु यहां पर हमसे स्वर्ग के विषय में कहते हैं।
३. "वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहेंगी"। प्रकाशित वाक्य २१:४ यह स्वर्ग का वर्णन है।

इसे मुखस्थ करें:

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया है कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया; ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाये"।

यूहन्ना ३:१६

पाठ पांच

परमेश्वर अपने पुत्र के जन्म की घोषणा करते हैं

लगभग दो हजार वर्ष पहले नासरत नाम नगर में एक बहुत ही सुन्दर लड़की रहती थी। उसकी मंगनी हो चुकी थी। उसके मंगेतर का नाम यूसुफ था।

इस लड़की के साथ एक बहुत असाधारण घटना घटी। एक दिन एक स्वर्गदूत ने उसके

पास आकर कहा कि उसे एक बेटा शीघ्र ही मिलेगा। यह बालक बहुत ही विशेष होगा। यह बालक परमेश्वर का पुत्र होगा।

परमेश्वर की प्रतिज्ञा

क्या आप पिछले पाठ को याद करते हैं? परमेश्वर ने आदम और हव्वा से प्रतिज्ञा की थी कि वह अपने पुत्र को इस दुनिया में हमें अपने पापों से बचाने के लिये भेजेगा। परमेश्वर के पुत्र को इस जगत् में रहने के लिये हमारे समान देह की आवश्यकता थी। उसे हाथ, पैर और बांह की आवश्यकता थी। इसीलिये परमेश्वर ने उसे एक बालक के रूप में इस दुनिया में भेजा। मरियम उसकी माता थी।

मरियम उत्तेजित थी!

मरियम ने जब यह सुना, कि उसे एक बेटा मिलेगा, वह परमेश्वर का पुत्र तथा जगत् का उद्धारकर्त्ता होगा, वह बहुत अधिक उत्तेजित एवं पुलकित हुई। परन्तु वह चिन्तित भी थी। "कैसे मुझे बेटा मिलेगा"? "क्योंकि मैं तो अविवाहित हूं"।–उसने कहा।

स्वर्गदूत ने उससे कहा, "चिन्ता मत कर, यह बालक असाधारण है। परमेश्वर तुझमें एक आश्चर्य कर्म करेगा"।

इस उत्तर ने मरियम को समझने में काफी सहायता की। वह आनन्दित होकर गाने लगी। उसने एक सुन्दर गीत बनाया। आप इस गाने के शब्द नये नियम की तीसरी पुस्तक, लूका रचित सुसमाचार के पहले अध्याय के पैंतालीस से पचपन पदों में पा सकते हैं।

यूसुफ के समक्ष एक स्वर्गदूत का प्रकट होना

मरियम के मंगेतर यूसुफ ने पाया कि मरियम से एक बालक उत्पन्न होने वाला है। वह खुश नहीं था। उसने मरियम से विवाह नहीं करना चाहा। जब वह सोच रहा था कि एक स्वर्गदूत उसके सामने उपस्थित हुआ। स्वर्गदूत ने स्वप्न में उससे कहा कि वह भयभीत न हो। मरियम से जो बालक उत्पन्न होनेवाला है वह परमेश्वर का एक विशेष दान है। किसी अन्य बालक का जन्म इसके समान नहीं होगा।

स्वर्गदूत यूसुफ को मरियम से विवाह करने को कहता है

स्वर्गदूत ने यूसुफ से कहा कि वह मरियम से विवाह कर ले। उसने यूसुफ को उस बालक का नाम भी बतलाया। वे उसे यीशु नाम से पुकारते थे। यीशु नाम का अर्थ है "वह अपने लोगों को उनके पापों से छुटकारा देगा"।

यूसुफ ने स्वर्गदूत के कहे अनुसार किया। उसने मरियम से विवाह किया तथा वे दोनों पति-पत्नी बन गये। अब परमेश्वर के पुत्र को एक दुनियावी पिता मिल गया जो उसकी देख भाल करे।

विवाह के पश्चात यूसुफ तथा मरियम नासरत में रहे। यूसुफ एक बढ़ई था। परन्तु यीशु का जन्म बैतुलहम नाम के शहर में हुआ। बैतुलहम पचहत्तर मील नासरत से दूर है। दूसरे पाठ में आप सीखेंगे कि यह सब कैसे हुआ।

लूका १: २६-३५

२६. छठवें महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राइल स्वर्गदूत गलील के नासरत नगर में एक कुवांरी के पास भेजा गया।

२७. जिसकी मंगनी यूसुफ नामक दाऊद के घराने के एक पुरूष से हुई थी। उस कुवांरी का नाम मरियम था।

२८. और स्वर्गदूत ने उसके पास आकर कहा, आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अदुग्रह हुआ है, प्रभु तेरे साथ है।

२९. वह उस वचन से बहुत घबरा गई, और सोचने लगी. कि यह किस प्रकार का अभिवादन है?

३०. स्वर्गदूत ने उससे कहा, हे मरियम भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है।

३१. और देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना।

३२. वह महान होगा, और परमप्रधान का पुत्र कहलायेगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा।

३३. वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; उसके राज्य का अन्त न होगा।

३४. मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह क्यों कर होगा? मैं तो पुरूष को जानती ही नहीं।

३५. स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया: "कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगी, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी, इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है, परमप्रधान का पुत्र कहलायेगा"।

इसे मुखस्थ करें:

"...तू उसका नाम यीशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से उद्धार करेगा"।

मत्ती १:२१

परमेश्वर के पुत्र का जन्म

उस रात्रि मरियम और यूसुफ काफी थक गए थे। यूसुफ के पैर में दर्द था। उसने एक लम्बी यात्रा तय की थी। वह करीब पचहत्तर मील चला था। मरियम का प्रसव काल समीप था, अत: वह चल नहीं सकती थी। शायद वह एक गधे की पीठ पर बैठी थी। फिर भी वह काफी थकी थी।

कैसर की आज्ञा

कैसर ने यह आज्ञा निकाली कि सभी अपने-अपने जन्मस्थान को जायें कि उनकी गिनती हो सके तथा कर लिया जा सके। यूसुफ का जन्म एक छोटे नगर बैतुलहम में हुआ था। वे दोनों नासरत से बैतुलहम तक काफी लम्बा सफर किये थे जो पचहत्तर मील था।

सराय में जगह नहीं

जब वे बैतुलहम पहुंचे तब वहां सभी काफी व्यस्थ थे। जितने लोगों का यहां जन्म हुआ था वे सभी यहां आए थे। सराय के सभी कमरे भर गये थे। यूसुफ सड़कों में स्थान ढूंढ़ता फिर रहा था कि वहां रात बिता सके। प्रत्येक सराय के पास से उसे यही जवाब मिला कि जगह नहीं है।

गौशाला में एक कमरा

यूसुफ और मरियम को चिन्ता के साथ-साथ थकान भी हो रही थी। उन्हें यह मालूम था कि मरियम का पुत्र शीघ्र जन्म लेने वाला है। उन्हें ठहरने के लिये एक स्थान की आवश्यकता थी। एक सराय के मालिक ने उनसे कहा कि वे उसके गौशाला में ठहर सकते हैं। क्योंकि उसके पास वही एक कमरा था। कुछ भी नहीं से यह बहुत अच्छा था। अत: मरियम और यूसुफ गौशाला में रात बिताने चले गये।

यीशु का जन्म

अर्द्ध रात्रि के वक्त बैतुलहम के गौशाला में बालक यीशु का जन्म हुआ। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि परमेश्वर के पुत्र का जन्म गौशाला में हुआ? किसी अस्पताल में नहीं! न किसी सुन्दर घर में! लेकिन एक गौशाला में! उसके लिये किसी के पास जगह नहीं थी!

यीशु हमसे कितना प्रेम करते हैं। वह स्वर्ग के समस्त सुखों को त्याग कर हमारे लिये संसार में आये। स्वर्ग में सब कुछ सुन्दर था। वहां सब कुछ सिद्ध है। वहां दु:ख और आंसू

नहीं। सभी परमेश्वर से प्रेम करते हैं। यीशु ने यह सब छोड़ कर बालक के रूप में गौशाला में जन्म लिया।

यीशु का बिछावन

मरियम ने कुछ कपड़ों से बालक यीशु को लपेटा था। उसने उसे चरनी में सुलाया। हमारे पास बालकों के लिये सुन्दर छोटे पलंग या पालने होते हैं। परन्तु यीशु के लिये गायों को चारा खिलाने वाला बाक्सा था।

यद्यपि यह एक गौशाला थी लेकिन काफी शांत थी। यह विश्राम का एक स्थान था। यूसुफ और मरियम प्रसन्नता से अपने नये बालक को देख रहे थे। गाय और भेड़ शांति से यूसुफ और मरियम को देख रहे थे।

उस रात्रि यीशु के लिये बैतुलहम के किसी सराय में जगह नहीं थी। परन्तु इससे भी अधिक विशेष एक बात है। क्या आपके हृदय में आज यीशु के लिये स्थान है? वह आपके जीवन में आना चाहता है। वह चाहता है कि आप उसे प्यार करें तथा उसकी प्रसन्नता के लायक जीवन बितायें। वह आपके सभी गलत कामों को माफ कर सकता है। क्या आप उसे अपने हृदय में आने और रहने के लिये निमंत्रण देंगे?

प्रार्थना: यीशु कृपा कर मेरे हृदय में आइये कि मैं आपको प्यार करुं। हमेशा मेरे जीवन में आपका निवास बना रहे। आमीन।

लूका २: १-७

१. उन दिनों में औगुस्तस कैसर की ओर से आज्ञा निकली, कि सारे जगत् के लोगों के नाम लिखे जाएं।
२. यह पहली नाम लिखाई उस समय हुई, जब क्विरिनियुस सूरिया का हाकिम था।
३. और सब लोग नाम लिखवाने के लिये अपने-अपने नगर को गये।
४. सो, यूसुफ भी इसलिये कि वह दाऊद के घराने और वंश का था, गलील के नासरत नगर से यहुदिया में दाऊद के नगर बैतुलहम को गया।
५. कि अपनी मंगेतर मरियम के साथ जो गर्भवती थी, नाम लिखवाए।
६. उनके वहां रहते हुए उसके जनने के दिन पूरे हुए।
७. और वह अपना पहिलौठा पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेट कर चरनी में रखा, क्योंकि उनके लिये सराय में जगह न थी।

इस पद को मुंखस्थ करें:

"मरियम ने उसे कपड़े में लपेट कर चरनी में रखा, क्योंकि उनके लिये सराय में जगह नहीं थी"।

लूका २:७

चरवाहे शुभ संदेश सुनते हैं

यीशु के जन्म की रात्रि में बैतुलहम की पहाड़ियों पर चरवाहों का दल था। अधिकांश चरवाहे अपनी भेड़ों को रात्रि में गौशाला ले आते थे। परन्तु ये चरवाहे भिन्न थे। वे सारी रात बाहर रहते थे। वे अपनी भेड़ों को कभी गौशाला में नहीं लाते थे।

एक स्वर्गदूत का प्रकट होना

आधी रात का समय था। चरवाहे आग के चारों ओर पड़े थे। अचानक वहां एक तेज ज्योति चमकी। चरवाहे अचम्भित हो गये। एक स्वर्गदूत उनके सामने खड़ा था। वह स्वर्गदूत अत्याधिक चमकवान था। वह स्वर्ग से आया था। चरवाहे स्वर्गदूत और उस तेज चमक से डर गये थे। उन्होंने पहले कभी स्वर्गदूत नहीं देखा था और न इतनी तेज चमक! स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "डरो मत! देखो मैं तुम्हारे लिये शुभ संदेश लाया हूं"।

चरवाहे स्वर्गदूत की बातों को बड़े ध्यान से सुन रहे थे। स्वर्गदूत ने आगे कहा, "क्या तुम्हें याद है कि परमेश्वर ने अपने एकलौते बेटे को हमारा उद्धारकर्त्ता करके भेजने की प्रतिज्ञा की थी। हां! परमेश्वर ने आज रात उसे पूरा किया है! यहां बैतुलहम में परमेश्वर के बेटे ने जन्म लिया है"!

स्वर्गदूतों का गान

इस संदेश से चरवाहे कितने अचंम्भित हुए इसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। परमेश्वर के बेटे का जन्म हुआ। चरवाहों को परमेश्वर की प्रतिज्ञा अपने बेटे के संबंध में याद थी। ये जानते थे कि परमेश्वर ने उसे दुनिया में भेजने की प्रतिज्ञा की है।

स्वर्गदूत ने उनसे और कहा, "यदि तुम बैतुलहम जाओगे तो इस बालक को कम्बल में लिपटा और गायों के चारा खाने के बक्से में पाओगे"।

और तब बहुत ही अद्भुत बात घटी। पहाड़ी पर बहुत स्वर्गदूत प्रकट हुए। चरवाहे उन्हें गिन नहीं सकते थे क्योंकि वे अधिक थे। ज्योति बहुत अधिक तेज थी। स्वर्गदतों ने गाना शुरू किया। पृथ्वी पर किसी ने इतना सुन्दर संगीत नहीं सुना है। हजारों स्वर्गदूत उस सुन्दर गीत को गा रहे थे जिसे वे स्वर्ग में गाया करते हैं। उन्होंने एक विशेष गीत गाया, " आकाश में परमेश्वर की महिमा हो और पृथ्वी पर उन मनुष्यों से जिनसे वह प्रसन्न है शांति हो"।

चरवाहे बैतुलहम जाते हैं

मैं नहीं जानता कि चरवाहों ने इसे महसूस किया या नहीं, परन्तु इस घटना में एक बहुत

अद्भुत बात थी। परमेश्वर के बेटे ने जन्म लिया। सारे जन्म लेने वालों में वह महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है। फिर भी स्वर्गदूत राजाओं और धनी व्यक्तियों के पास नहीं गये। वे साधारण चरवाहों के पास आये।

परमेश्वर हमसे कह रहे हैं कि यीशु सबके लिये आये। सभी लोग यीशु के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।

चरवाहे जल्दी बैतुलहम की ओर चले। उन्होंने उस गौशाला को पाया जहां यीशु का जन्म हुआ था। उन्होंने वहां यीशु बालक को देखा। उन्होंने घुटने टेककर परमेश्वर से प्रार्थना की तथा उन्हें अपने बेटे को भेजने के लिये धन्यवाद दिया।

तब वे वहां से लौटे। उन्होंने उन सारी आश्चर्यजनक घटनाओं का जिक्र सभी से किया।

प्रस्तुत बाइबल खंड को पढ़ें तथा इन प्रश्नों के उत्तर दें। आप बाइबल खंड को पुन: देख सकते हैं। लूका २:८-२०

८. और उस देश में कितने गड़ेरिये थे जो रात को मैदान में रहकर अपने झुंड का पहरा देते थे।

९. और प्रभु का एक दूत उनके पास आ खड़ा हुआ; और प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमका, और वे बहुत डर गये।

१०. तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, मत डरो; क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिये होगा।

११. कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है।

१२. और इसका तुम्हारे लिये यह पता है, कि तुम एक बालक को कपड़े में लिपटा और चरनी में पड़ा पाओगे।

१३. तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों का दल परमेश्वर की स्तुति करते हुए और यह कहते दिखाई दिया।

१४. कि आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शांति हो।

१५. जब स्वर्गदूत उनके पास से स्वर्ग को चले गये, तो गड़रियों ने आपस में कहा आओ, हम बैतुलहम जाकर यह बात हुई है, और जिसे प्रभु ने हमें बताया है देखें।

१६. और उन्होंने तुरन्त जाकर मरियम और यूसुफ को और चरनी में उस बालक को पड़ा देखा।

१७ इन्हें देखकर उन्होंने यह बात जो इस बालक के विषय में उनसे कही गई थी, प्रकट की।

१८. और सब सुनने वालों ने उनसे जो गड़रियों ने उनसे कहीं आश्चर्य किया।

१९. परन्तु मरियम ये सब बातें अपने मन में रखकर सोचती रही।

२०. और गड़ेरिये जैसा उनसे कहा गया था, वैसा ही सब सुनकर और देखकर परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए लौट गए।

इस पद को मुखस्थ करें।

"तब एक स्वर्गदूत ने उनसे कहा, 'मत डरो, क्योंकि देखो मैं तुम्हारे बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं ...कि आज तुम्हारे एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है, यही मसीह प्रभु है'।"

लूका २:१०-११

अब पाठ आठ करें

पाठ आठ

यीशु—एक छोटा लड़का

यीशु के जन्म के पश्चात यूसुफ और मरियम कुछ समय तक बैतुलहम में रहे। भीड़ के चले जाने के पश्चात शायद उन्होंने एक घर पा लिया था।

पूर्व से कुछ मनुष्य

एक दिन पूर्व देश से कुछ व्यक्ति यीशु बालक से मिलने आये। उन्होंने बतलाया कि वे एक अद्भुत तारा देख कर उसके पीछे चले आये हैं। यह तारा उस घर के ऊपर ठहर गया जिसमें यीशु था। उन्होंने यीशु को दान दिये। उन्होंने उसे दण्डवत भी किया।

यीशु को पाने के लिये ये मनुष्य उसके घर का पता पूछते आये थे। उन्होंने उस देश के राजा के यहां भी पूछा कि शायद वे यीशु को वहां पायें। वह राजा नहीं चाहता था कि यीशु दूसरा राजा उसके देश में जन्म ले। उसने यह समझा कि यीशु बड़ा होकर उसके राज्य को छीन लेगा।

इसलिये उसने एक निर्दयी काम किया। उसने यह आज्ञा दी कि बैतुलहम के सभी बालक जो दो वर्ष से छोटे हैं, मार डाले जायें।

उस दिन कितना रोना एवं दु:ख था! सिपाहियों ने प्रत्येक घर में घुसकर सभी छोटे लड़कों को मार डाला।

यीशु का बच जाना

परन्तु यीशु उन बालकों में नहीं था। एक स्वर्गदूत ने यूसुफ और मरियम को चिनौती दी कि राजा यीशु को मार डालना चाहता है। उसने उससे जीवन बचाने के लिये भागने को कहा।

उसी रात वे मिस्र को भाग गये। यूसुफ, मरियम और यीशु कुछ समय तक मिस्र में रहकर

फिर नासरत लौट आये। यूसुफ ने फिर बढ़ई का कार्य आरंभ कर दिया। शायद यीशु उनकी सहायता करते थे।

यीशु का बढ़ना

जब यीशु बारह वर्ष का हुआ तब यूसुफ औरं मरियम उसे लेकर यरूशलेम मन्दिर में पर्व मनाने जाने का निश्चय किया। प्रति वर्ष बहुत लोग वहां जाते थे। यह एक लम्बा सफर था। उन्हें सारा दिन पैदल चलना था।

परन्तु उन्होंने परवाह नहीं की। अधिकांश बच्चे भी जाते थे। यीशु भी उनके साथ गया।

पर्व के बाद एक बड़ा झुंड पुन: नासरत की ओर वापस लौटने लगा। उन्होंने एक दिन की यात्रा की थी। यूसुफ और मरियम यीशु को ढूंढ़ रहे थे। उन्होंने उसे पूरे दिन नहीं देखा था। वे चिन्तित नहीं थे। उन्होंने समझा कि यीशु भीड़ के अन्य लड़कों के साथ खेल रहा होगा।

किन्तु रात्रि में उन्हें चिन्ता होने लगी क्योंकि उन्होंने अब तक यीशु को नहीं देखा था। उन्होंने भीड़ में खोजा। लेकिन यीशु नहीं मिला। उन्होंने फिर यरूशलेम लौटने का निश्चय किया।

दूसरी सुबह वे लौट गये। उन्होंने वहां यीशु को खोजा। दुकानों में भी खोजा। कुछ मित्रों के घरों में भी उसे खोजा। सभी जगह वे उसे खोजे लेकिन यीशु को नहीं पा सके।

अन्त में वे मन्दिर में गये जो यहूदियों का मन्दिर था। उन्होंने वहां बड़े आश्चर्य से देखा कि एक छोटा लड़का धर्म के अगुवों से बात-चीत कर रहा है। यह लड़का यीशु था। धार्मिक अगुवे उससे प्रश्न पूछ रहे थे और उसके उत्तरों से वे चकित थे।

यूसुफ और मरियम घबरा गये। मरियम ने कहा, "पुत्र! तुमने क्यों हमसे ऐसा व्यवहार किया? मैं और तुम्हारा पिता तुम्हें सभी जगह ढूंढ़ते फिर रहे हैं"।

यीशु ने उत्तर दिया, "परन्तु तुम क्यों मुझे ढूंढ़ते हो? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे इस मन्दिर में रहना आवश्यक है? यह मेरे पिता का घर है"?

इन बातों को कहकर यीशु ने यह दिखलाया कि वह अन्य बालकों से सर्वथा भिन्न है। वह नासरत वापस आया और तीस वर्ष के होने तक वही रहा।

प्रस्तुत बाइबल खंड पढ़ें। लूका २:४१-५२

४१,४२. उसके माता पिता प्रति वर्ष फसह के पर्व में यरूशलेम को जाया करते थे। जब वह बारह वर्ष का हुआ, तो वे पर्व की रीति के अनुसार यरूशलेम को गये।

४३. और जब वह उन दिनों को पूरा करके लौटने लगे तो वह लड़का यीशु यरूशलेम में रह गया; और यह उसके माता पिता नहीं जानते थे।

४४. वे यह समझ कर, कि वह और यात्रियों के साथ होगा, एक दिन का पड़ाव निकल गये; और उसे अपने कुटुंबों और जान-पहचान में ढूंढ़ने लगे।

४५. पर जब नहीं मिला, तो ढूंढ़ते-ढूंढ़ते फिर यरुशलेम को लौट गये।

४६,४७. और तीन दिन के बाद उन्होंने उसे मन्दिर में उपदेशकों के बीच में बैठे, उनकी सुनते और उनसे प्रश्न करते हुए पाया। और जितने उसकी सुन रहे थे व सब उसकी समझ और उसके उत्तरों से चकित थे।

४८. तब वह उसे देख कर चकित हुए और उनकी माता ने उनसे कहा; हे पुत्र, तूने हमसे ऐसा व्यवहार क्यों किया? देख तेरा पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूंढ़ते थे।

४९. उसने उनसे कहा; तुम मुझे क्यों ढूंढ़ते थे? क्या नहीं जानते थे; कि मुझे अपने पिता के भवन में होना आवश्यक है?

५०. परन्तु जो बात उसने उनसे कही उन्होंने उसे नहीं समझा?

५१. तब वह उनके साथ गया, और नासरत में आया, और उनके वंश में रहा, और उसकी माता ने यह सब बातें अपने मन में रखीं।

५२. और यीशु बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।

इस पद को मुखस्थ करें

"क्या नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के भवन में होना आवश्यक है"। लूका २:४९

पाठ नौ

यीशु आश्चर्य कर्म शुरु करते हैं

जब यीशु 30 वर्ष के हुए तब उन्होंने यूसुफ और मरियम को छोड़कर पूरे शहर में घूमना शुरू किया। जहां कहीं भी गये उन्होंने लोगों से बातें की। जो बातें वह कहता था उससे वे मोहित हो जाते थे बहुत जल्द लोगों की भीड़ उनके पीछे हो ली। कभी-कभी पांच हजार तक के लोग उसकी सुनने को जाते थे।

यीशु बीमारों को चंगा करते हैं

यीशु दौरा करते हुए कई बार कफरनहूम के छोटे शहर में गये। यह शहर एक सुन्दर झील के किनारे बसा था। एक बार जब वे इस शहर में आये तब पतरस की सास बहुत बीमार थी। पतरस यीशु के बहुत करीब के मित्रों में से था। वह यीशु का चेला था। यीशु ने पतरस की सास को चंगा किया। उसी रात लोगों ने सुना कि यीशु पतरस के घर पर था। तब वे सभी तरह के बीमारों को वहां लाये और तुरन्त ही पूरा आंगन बीमारों से भर गया। यीशु ने उन सबको को चंगाई दी।

यीशु एक कोढ़ी को चंगा करते हैं

एक बार एक कोढ़ी आकर यीशु के पांवों पर गिर पड़ा। कोढ़ी वह व्यक्ति है जिसके पूरे शरीर में सफेद घाव होते हैं। उसकी उंगुलियां गल कर गिरती हैं। यह एक बहुत ही खराब प्रकार की बीमारी है जो किसी भी व्यक्ति को हो सकती है।

इस कोढ़ी ने यीशु से बिनती की कि वह उसे शुद्ध करें। यीशु को उस व्यक्ति पर बहुत तरस आया। यीशु ने कहा "मैं तुझे चंगा करना चाहता हूं। चंगा हो जा"।

तुरन्त ही वह मनुष्य पूरी तरह चंगा हो गया।

छत का हटाया जाना

इसके कुछ दिनों के बाद यीशु कफरनहूम लौट आये। यह खबर कि यीशु शहर में है, पूरी तजी के साथ फैलने लगी और बहुत से लोग उस घर पर आये जहां वह ठहरा था। तुरन्त घर लोगों से भर गया और लोग घर के सामने इकट्ठे होने लगे। यीशु ने उनसे परमेश्वर के विषय में बातें की।

जब यीशु भीड़ से बातें कर रहा था तब कमरे की छत जिसके नीचे वे खड़े थे हटायी गयी। कुछ व्यक्ति छत पर थे और छत उधेड़ कर एक छेद बना रहे थे। हर एक उन्हें देख रहा था। जब उन्होंने छेद काफी बड़ा बना लिया तब एक व्यक्ति को जो खाट पर सोया था यीशु के सामने नीचे उतारा। वह व्यक्ति चल-फिर नहीं सकता था।

यीशु ने उस व्यक्ति पर दृष्टि की। तब उसने कहा "पुत्र तेरे पाप क्षमा हुए"। इस बात ने सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। उन्होंने सोचा था यीशु उस व्यक्ति को उठाकर चलने को कहेंगे।

वहां पर कुछ यहूदी अगुवे भी थे। वे उन बातों से जो यीशु ने कही थी बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने कहा कि सिर्फ परमेश्वर ही पापों की क्षमा दे सकता है। उन्होंने यह विश्वास करने से इन्कार किया कि यीशु ही परमेश्वर है।

यीशु ने उनके विचारों को जान लिया। वे हमेशा जानते हैं कि हम क्या सोचते हैं और क्या कहते हैं। अतः उन्होंने उनसे एक प्रश्न पूछा—"क्या कठिन है" "एक व्यक्ति से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए या कि यह कहना कि उठ और चल-फिर"? तब यह प्रमाणित करने को कि वह सचमुच परमेश्वर है उस व्यक्ति पर दृष्टि की और उससे कहा कि "उठ और चल-फिर"।

व्यक्ति अपनी खाट से उछल पड़ा और खाट उठा कर घर से बाहर निकल पड़ा। सभी इस आश्चर्यकर्म पर चकित थे।

यीशु कई तरह से लोगों को दिखाता रहा कि वह परमेश्वर है। क्या आप विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर है और वह आज भी जीवित है। क्या आपने उससे अपने दिल के अन्दर आने को कहा?

यीशु मेरी सहायता कर कि मैं विश्वास कर सकूं कि आप परमेश्वर हैं। मेरी सहायता करें कि मैं अपना जीवन आपको दे सकूं। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्यार कर सकूं और वही करुं जो आपके भाता है। आमीन।

मरकुस २: १-१२ (नया नियम)

१,२. कई दिन के बाद वह फिर कफरनहूम में आया और सुना गया, कि वह घर में है. फिर इतने लोग इक्ट्ठे हुए, कि द्वार के पास भी जगह नहीं मिली और वह उन्हें वचन सुना रहा था।

३,४. और लोग एक झोले के मारे हुए को चार मनुष्यों से उठाकर उसके पास ले आए! परन्तु जब वह भीड़ के कारण उसके निकट न पहुंच सके, तो उन्होंने उस छत को जिसके नीचे वह था। खोल दिया, और जब उसे उधेड़ चुके, तो उस खाट को जिस पर झोले का मारा हुआ पड़ा था लटका दिया।

५. यीशु ने उनका विश्वास देखकर, उस झोले के मारे हुए से कहा, हे पुत्र तेरे पाप क्षमा हुए।

६,७. तब कई एक शास्त्री जो वहां बैठे थे, अपने-अपने मन में विचार करने लगे कि यह मनुष्य ऐसा क्यों कहता है। यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है, परमेश्वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है।

८,९. यीशु ने तुरन्त अपनी आत्मा में जान लिया, कि वे अपने मन में ऐसा विचार कर रहे हैं, और उनसे कहा, तुम अपने-अपने मन में यह विचार क्यों कर रहे हो? सहज क्या है। क्या झोले के मारे से यह कहना, कि तेरे पाप क्षमा हुए या यह कहना, कि उठ अपनी खाट उठा कर चल-फिर?

१०,११. परन्तु जिससे तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है (उसने उस झोले के मारे हुए से कहा) मैं तुझसे कहता हूं, उठ अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा।

१२. और वह उठा, और तुरन्त खाट उठाकर और सबके सामने से निकलकर चला गया। इस पर सब चकित हुए, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, कि हमने ऐसा कभी नहीं देखा।

इस पद को मुखस्थ करें:

"पुत्र तुम्हारे पाप क्षमा हुए"। मरकुस २:५

शिष्यों को यीशु की शिक्षा

यीशु का अपनी मृत्यु के विषय में कहना

लोगों के बीच तीन वर्षों तक प्रचार और सेवा करने के उपरान्त यीशु अपने शिष्यों को बतलाते हैं कि उनकी मृत्यु शीघ्र होने वाली है। यरुशलेम के धार्मिक अगुवे उन्हें मार डालना चाहते हैं। उसने उन्हें उदास और दु:खित होने से मना किया, क्योंकि वह तीन दिन के बाद फिर जी उठेगा। इस पुस्तिका के अन्तिम पाठ में हम इसका अध्ययन करेंगे। यीशु ने शिष्यों को बतलाया था कि उनकी मृत्यु "विशेष" थी।

हममें से कोई भी परमेश्वर की इच्छा को पूरी तरह से पूर्ण नहीं कर सकते हैं। हम सभी पापी हैं। परमेश्वर पाप को अवश्य दंड देता है। परन्तु परमेश्वर ने हमसे बहुत अधिक प्रेम किया। उसने अपने निज पुत्र को क्रूस पर हमारे पाप का दंड उठाने के लिये भेजा। यही है "सुसमाचार"।

यीशु का शिष्यों को ढांढस देना।

शिष्य यह सुनकर कि पुनरुत्थान के बाद यीशु उन्हें छोड़ देगा, बहुत दु:खित थे। यीशु ने उन्हें शोकित होने से मना किया। क्योंकि जब कोई विशेष व्यक्ति यात्रा करता है—उसके सहायक सभी चीजों की तैयारी के लिये उसके पहले जाते हैं। यीशु हम सबको इतना ही विशेष समझते हैं। हमारे लिये एक सुन्दर स्थान तैयार करने वे हमसे पहले स्वर्गीय दुनिया में चले गये हैं। स्वर्गीय दुनिया को वे "पिता का घर" कहते थे—जहां रहने के लिये बहुत स्थान है। प्रत्येक व्यक्ति जो यह विश्वास करता है कि यीशु उसके पापों के लिये मरा और जो उसके पीछे चलता है, वही उसके साथ वहां होगा। उसने अपने शिष्यों को बतलाया था कि उसे मर कर पुन: जी उठना है। और तब प्रत्येक विश्वास करने वाले के लिये अपने "पिता के घर" में स्थान तैयार करने जाना है। इसी कारण उसने अपने शिष्यों से कहा कि मेरे छोड़ कर जाने से तुम उदास और शोकित मत हो। आपको विश्वास करना है कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है। अपने पापों से मन फिराएं और विश्वास करें कि यीशु के कारण परमेश्वर आपके पापों को क्षमा करता है। वही आपको नया जीवन देने की सामर्थ देता है। ऐसा करने से ही आपको निश्चय होगा कि मृत्यु के बाद आप हमेशा यीशु के साथ रहेंगे।

यह जीवन

यीशु कहते हैं कि यदि हम उस पर विश्वास करें, तो अभी से हमारे जीवन में अद्‌भुत बातें घटना आरंभ हो जायेंगी। यीशु पर विश्वास करने वाले फल उत्पन्न करते हैं—भली बातें जो परमेश्वर को महिमा देती हैं और पड़ोसियों को लाभ। जैसा दूसरों के लिये नि:स्वार्थ प्रेम,

आनन्द, मेल और दयालुता। यीशु कहता है कि वह एक दाखलता के समान है और हम उसकी डालियां हैं अतः वह ही (यीशु) है जो हमें "फल" पैदा करने के लिये जीवन और सामर्थ देता है। वह हमें दूसरों को उसके विषय बतलाने की आज्ञा भी देता है। इसे करने के लिये वह हमें सामर्थ और साहस देता है। "फल" नहीं लाने से वह हमें अपने से काट डालने की चिनौती भी देता है। आप अपने हृदय में एक नये आनन्द और शांन्ति को तभी पा सकते हैं जब आप यीशु को अपना जीवन अर्पण करके यह स्वीकार करें कि यही परमेश्वर का एकलौता जीवित पुत्र है जो हमें बचा सकता है। यदि आपने अभी तक यीशु को अपने हृदय में प्रभु और उद्धारकर्त्ता करके स्वीकार नहीं किया तो अभी करने की सोचें।

प्रार्थना

यीशु आपको धन्यवाद कि आप मेरे पापों के बदले मरे और मेरे लिये एक स्थान तैयार कर रहे हैं। मेरी सहायता करें कि मैं आप पर विश्वास करुं। आपके लिये मेरे जीवन को सुन्दर बनाइए। आमीन।

यूहन्ना १४:२-७, १५:१-६

इस पद को मुखस्थ करें:

"तुम्हारा मन व्याकुल न हो तुम परमेश्वर पर विश्यास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो"।
यूहन्ना १४:२

यूहन्ना १४: १-७, १५:१६

अध्याय चौदह (यीशु अपने शिष्यों से कह रहे हैं)

१. "तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो।

२,३,४. मेरे पिता के घर में बहुत-से रहने के स्थान हैं यदि न होते तो मैं तुमसे कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो। और जहां मैं जाता हूं तुम वहां का मार्ग जानते हो"।

५. थोमा ने उससे कहा हे प्रभु हम नहीं जानते कि तू कहां जाता है? तो मार्ग कैसे जानें?

६,७. यीशु ने उससे कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। यदि तुमने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते, और अब उसे जानते हो, और उसे देखा भी है"।

अध्याय पन्द्रह

१. सच्ची दाखलता मैं हूं और मेरा पिता किसान है।

२. जो डाली मुझमें है, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे वह छांटता है ताकि और फले।

३. तुम तो उस वचन के कारण जो मैंने तुमसे कहा है शुद्ध हो।

४. तुम मुझमें बने रहो, और मैं तुममें; जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझमें बने न रहो तो नहीं फल सकते।

५. मैं दाखलता हूं; तुम डालियां हो; जो मुझमें बना रहता है, और मैं उसमें वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

६. यदि कोई मुझमें बना न रहे, तो वह डाली की नाई फेंक दिया जाता है, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोर कर आग में झोंक देते हैं; और वे जल जाती हैं।

पाठ ग्यारह

यीशु क्रूस पर चढ़ाये जाते हैं

काफी रात बीत चुकी थी। यीशु यरूशलेम से बाहर एक बगान में थे। उसके कुछ शिष्य उसके साथ थे। यीशु प्रार्थना कर रहे थे।

यीशु प्रार्थना करते हुए बगीचे के किनारे पर आ गये। उन्होंने रास्ते पर एक झुण्ड मनुष्यों का देखा। वे उसी बगीचे की ओर आ रहे थे। जैसे ही वे बगीचे में पहुंचे एक व्यक्ति ने दौड़ कर यीशु को चूमा।

उस व्यक्ति का नाम यहूदा था।

यहूदा यीशु को पकड़वाता है।

यहूदा यीशु के शिष्यों में से एक था। उसने यीशु को पकड़वाया। उसने यहूदी अगुवों से पूछा कि यदि वह कुछ सैनिकों द्वारा यीशु को पकड़वायेगा तो वे उसे कितना रूपया देंगे। यहूदी अगुवों ने प्रतिज्ञा की कि वे यहूदा को ३० चांदी के टुकड़े देंगे। अतः उस रात यहूदा ने सैनिकों को यीशु के पास ले जाने में अगुवाई की। उसने यीशु को चूमा यह दिखाने के लिये कि कौन यीशु है। उन्होंने यीशु को कैद कर लिया।

यीशु ने कोशिश की

उसी रात वे यीशु को यरूशलेम न्यायालय में ले गये। यहूदी अगुवों ने यीशु से पूछा कि क्या वह सचमुच परमेश्वर है। यीशु ने बताया कि वह परमेश्वर है। उसने उनसे यह भी बताया कि वह फिर किसी दिन पृथ्वी पर लौट आयेगा और प्रत्येक व्यक्ति उसे देखेगा।

इस बात से यहूदी अगुवे क्रोधित हो उठे और उन्होंने निर्णय किया कि उनको मार डालना चाहिए। किन्तु उन्हें उसे मार डालने का अधिकार नहीं था। अतः वे उसे पिलातुस के पास ले गये जो रोमी गवर्नर था।

पिलातुस यीशु की जांच करता है

पिलातुस ने यीशु से कुछ प्रश्न पूछे। वह यह जान गया कि यीशु बहुत अच्छे व्यक्ति हैं। उसने यहूदी अगुवों को बताया कि मुझे इस व्यक्ति में कुछ दोष नहीं दिखाई देता कि उसे मृत्यु दण्ड दिया जाये। परन्तु उन्होंने उसकी नहीं सुनी। और उन्होंने चिल्लाना आरम्भ किया, "उसे क्रूस पर चढ़ाओ। उसे क्रूस पर चढ़ाओ"।

पिलातुस आज्ञा देता है

अन्त में पिलातुस ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की आज्ञा दे दी। इससे पहले कि वे यीशु को वहां ले जाते जहां लोग क्रूस पर चढ़ाये जाते थे, उन्होंने उसके कपड़े उतार डाले। उन्होंने उसको एक पुराना वस्त्र पहनाया। उन्होंने उसके सिर पर कांटों का ताज रखा और उसकी आंखें बन्द कर दी। तब उन्होंने उसके चेहरे पर थूका, उसका मजाक किया और उसे थप्पड़ मारे और उससे पूछा कि किसने उसे थप्पड़ मारा।

यीशु क्रूस पर चढ़ाये गये

उन्होंने यीशु के वस्त्र फिर से उस पर रखे और बड़ा क्रूस उसकी पीठ पर रख दिया और उसे उस स्थान तक ढोने की आज्ञा दी जहां उन्हें मृत्यु दण्ड दिया जाता।

उन्होंने क्रूस को जमीन पर रखा उन्होंने उसके पांवों को क्रूस पर रखा और कीलों से आरपार तक छेदा। उन्होंने उसके हाथों को क्रूस पर रखा और कीलों को आरपार छेदा। तब उन्होंने क्रूस को खड़ा किया और यीशु को वहां मरने के लिये टांग दिया गया।

और दो व्यक्ति भी यीशु के साथ मारे जा रहे थे। वे डाकू थे। एक ने यीशु से प्रार्थना की कि वह उसे बचा ले। यीशु ने यह प्रतिज्ञा की कि वह उसके साथ आज ही के दिन स्वर्ग में एक साथ होंगे। तीन घंटों के बाद यीशु की मृत्यु हो गई।

क्या आप जानते हैं उसके बाद क्या हुआ?

क्या आप जानते हैं कि उस दिन सचमुच क्या हुआ? ईश्वर पिता अपने पुत्र को दण्ड दे रहे थे। किन्तु यीशु ने कुछ भी गलत काम नहीं किया था। क्या उन्होंने किया था? नहीं, निश्चय यीशु ने कोई भी गलत काम नहीं किया था। हम और आप हैं जिन्होंने कि गलत काम और बुरा काम किया था और हम और आप हैं जिन्हें सजा मिलनी थी। किन्तु परमेश्वर ने हमारे बदले में यीशु को दण्ड दिया। परमेश्वर हमसे इतना प्यार करता है कि उन्होंने अपने एकलौते पुत्र को दण्डित किया कि हमें कभी भी अपने पापों के लिये दण्ड न मिले।

यीशु के क्रूस पर मरने के वक्त यही बातें हो रही थीं। वे इसलिये मरे कि आपके सभी पापों को हर लें।

वे चाहते हैं कि आप अपना जीवन उसे दें। उसने अपना जीवन हमें दिया। वे चाहते हैं कि हम उनके प्रति धन्यवादी हों। वे चाहते हैं कि आप विश्वास करें। उन्होंने आपके पापों का बदला चुका दिया और वह आपको क्षमा करेगा। वह चाहते हैं कि आप विश्वास करें कि जब आप मर जायेंगे तो स्वर्ग जायेंगे कि उसके साथ रहें। वह चाहते हैं कि आप उसे प्यार करें और उसके लिये एक अच्छा जीवन व्यतीत करें।

क्या आप अपना जीवन उसे देंगे?

प्रार्थना: यीशु आपको धन्यवाद कि आपने मेरे लिये प्राण दिये। जो दण्ड मुझे लेना था उसे आपने लिया उसके लिये धन्यवाद। आमीन।

निम्नलिखित बाइबल खंड पढ़ कर प्रश्नों के उत्तर दें। आप उत्तर के लिये पुन: बाइबल खंड देख सकते हैं।

लूका २३:३८-४९

३८. और उसके ऊपर एक पत्र भी लगा था, कि यह यहूदियों का राजा है।

३९. जो कुकर्मी लटकाए गए थे, उनमें से एक ने निन्दा करके कहा, क्या तू मसीह नहीं? तो फिर अपने आप को और हमें बचा।

४०,४१. इस पर दूसरे ने डांटकर कहा, क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता? तू तो वही दण्ड पा रहा है। और हम तो न्यायानुसार दण्ड पा रहे हैं, क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं, पर इसने कोई अनुचित काम नहीं किया।

४२. तब उसने कहा, हे यीशु जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना।

४३. उसने उससे कहा, मैं तुझसे सच कहता हूं, कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।

४४,४५. और उससे लगभग दो पहर से तीसरे पहर तक सारे देश में अन्धियारा छाया रहा। और सूर्य का उजियाला जाता रहा। और मन्दिर का पर्दा बीच से फट गया।

४६. और यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा, हे पिता मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं, और यह कह कर प्राण छोड़ दिए।

४७. सूबेदार ने जो कुछ हुआ था देखकर, परमेश्वर की बड़ाई की, और कहा निश्चय यह मनुष्य धर्मी था।

४८,४९. और भीड़ यह देखने को इकट्ठी हुई थी, इस घटना को देखकर छाती पीटती हुई लौट गई। और उसके सब जान पहचान, और जो स्त्रियां गलील से उसके साथ आई थीं, दूर खड़ी हुई यह सब देख रही थीं।

यीशु मृत्यु में से जी उठते हैं

कई तरह से देखा जाये तो अन्तिम कहानी जो हमने देखी वह बहुत दुःख भरी कहानी है। किन्तु दूसरी तरह से देखा जाये तो यह बहुत ही अद्भुत कहानी है। परमेश्वर ने हम से इतना प्रेम किया कि अपने पुत्र को हमारे पापों के बदले दण्ड दिया। यीशु उस दिन क्रूस पर मरे, इस बात की निश्चयता करने के लिये सैनिकों ने उनके पंजर को बरछी से छेदा और उससे लहु और पानी बह निकला। उन्होंने यीशु की मृत देह को क्रूस से उतारा। उनके एक मित्र ने उनकी देह को मांग लिया। वह उसे अपनी एक गुफा में ले गया। उस समय के कब्र हमारे आज के कब्रों के अलग थे। ये कब्रें पहाड़ियों में बनी गुफाओं के अन्दर होते थे। यीशु की देह इसी प्रकार की एक गुफा में रखी गई। एक चट्टान गुफा के द्वार पर लुढ़का दी गई। पत्थर इतना बड़ा था कि कई व्यक्तियों द्वारा ही हटाया जा सकता था।

यह सब शुक्रवार के दिन की घटना है। शनिवार के दिन यहूदियों के उपासना का दिन था। उन्हें शनिवार के दिन मृतकों के पास जाना मना था। पहरेदार गुफादार बिठाये गये थे क्योंकि पिलातुस ने सुन रखा था कि यीशु ने कहा है कि वह मृतकों में से जी उठेगा। किन्तु पिलातुस ने यह विश्वास नहीं किया। उसने सोचा कि यीशु के कुछ शिष्य उसकी देह को चुरा कर यह कह सकते हैं कि यीशु जी उठे हैं।

पुनरुत्थान की भोर

रविवार की भोर को बड़े सवेरे कुछ स्त्रियां गुफा पर आईं। वे यीशु की देह पर सुगन्धित द्रव्य मलना चाहती थीं। यह यहूदियों की रीति थी उन्हें शुक्रवार की रात को यह करने का मौका नहीं मिला था और शनिवार को गुफा में आने की मनाही थी अतः वे उसे तब नहीं कर सकी थीं।

अतः रविवार की सुबह प्रकाश होने से पूर्व वे गुफा के लिये निकल पड़ीं। जब वे गुफा के समीप आईं तो उन्हें कुछ स्मरण आया। उनके साथ कोई नहीं था जो कि पत्थर को लड़का सके कि वे गुफा पर जा सकें।

किन्तु फिर भी वे चलती गईं। उन्होंने गुफा में प्रवेश किया परन्तु उन्हें आश्चर्य हुआ कि पत्थर लुड़का हुआ था। ऐसा दिखाई पड़ता था कि किसी बड़े हाथ ने उसे उठा कर अलग रख दिया है।

वे इसे नहीं जान सकीं। किन्तु जब वे गुफा में गई तो वहां एक बड़ा भूडोल हुआ था। एक स्वर्गदूत ने स्वर्ग से आकर पत्थर को किनारे हटा दिया था। वह उस पर बैठा था। सैनिक इतने भयभीत थे कि वे बेहोश हो गये थे।

और गुफा खाली थी

यीशु वहां पर नहीं थे। यीशु मृतकों में से जी उठे थे जैसा कि उन्होंने कहा था।

स्वर्गदूत ने स्त्रियों से बातचीत की

उसी स्वर्गदूत ने स्त्रियों को नमस्कार किया। और कहा "डरो मत, मैं जानता हूं कि तुम यीशु को ढूंढ़ती हो जो क्रूस पर चढ़ाया गया था किन्तु वह यहां नहीं है। जैसा उसने कहा था वह फिर से जीवित हो गया है। गुफा में आकर देखो जहां उसकी देह थी"।

स्त्रियों ने गुफा में जाकर देखा। यीशु जा चुका था। वे देख सकती थीं जहां उसकी देह पड़ी थी वे डरी हुई थीं किन्तु आनन्दित भी थीं। वे दौड़ पड़ीं ताकि दूसरे शिष्यों को यह सूचना दें। उसी दिन से यीशु ने अपने आप को अपने कई शिष्यों को दिखलाना शुरू किया। एक बार वह पांच सौ लोगों को एक साथ दिखाई दिया।

वह पृथ्वी पर चालीस दिनों तक रहा।

यीशु स्वर्ग पर चढ़ जाते हैं।

एक दिन यीशु ने अपने शिष्यों को एक पहाड़ पर एकत्र किया। यीशु ने उनसे कहा कि पूरे संसार में जाकर हरएक को उसके विषय में बतायें।

तब यीशु ने अपना हाथ शिष्यों पर पसारा कि उन्हें आशिष दें। और जैसे ही उसने यह किया वह उपर उठने लगा। ऊपर, ऊपर, ऊपर वह आकाश में चला गया जब तक कि एक बादल के टुकड़े ने उसे शिष्यों की दृष्टि से छिपा नहीं लिया।

फिर भी शिष्य आकाश की ओर ताकते रहे। तब एक स्वर्गदूत वहां आया "क्यों तुम यीशु को देखते हो"? उसने पूछा। "वह फिर आने वाला है-जैसा कि तुमने उसे स्वर्ग पर जाते देखा है"।

मरकुस १६:१-८

१,२. जब सब्त का दिन बीत गया, तो मरियम मगदलीनी और याकूब की माता मरियम और सलोमी ने सुगन्धित वस्तुएं मोल लीं, कि आकर उसपर मलें। और सप्ताह के पहले दिन बड़े भोर जब सूरज निकला ही था, वे कब्र पर आईं

३. और आपस में कहती थीं, कि हमारे लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर कौन लुड़काएगा।

४. जब उन्होंने आंख उठाई, तो देखा कि पत्थर लुड़का हुआ है। क्योंकि वह बहुत ही बड़ा था।

५. और कब्र के भीतर जाकर, उन्होंने एक जवान को श्वेत वस्त्र पहने हुए दाहिनी ओर बैठे देखा और चकित हुईं।

६,७. उसने उनसे कहा, चकित मत हो तुम यीशु नासरी को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूंढ़ती हो, वह जी उठा है, यहां नहीं है। देखो यही स्थान है जहां उन्होंने रखा था। परन्तु तुम जाओ, और उसके चेलों और पतरस से कहो, कि वह तुमसे पहले गलील को जाएगा, जैसा उसने तुमसे कहा था, तुम वहीं उसे देखोगे।

८. और वे निकलकर कब्र से भाग गईं, क्योंकि कंपकपी और घबराहट उनपर छा गई थी और उन्होंने किसी से कुछ न कहा, क्योंकि डरती थीं।

पाठ एक पर जाच

भाग एक: बाइबल अभ्यास

निम्नलिखित बाइबल खंड को पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दें। आप पुन: बाइबल खंड को उत्तर देने के लिये देख सकते हैं। प्रत्येक प्रश्न के अन्त में जो संख्या है उसका बाइबल के कौन से खंड में उत्तर मिलेगा, जो इसे बतलाती है।

१. किसने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया? ________________ (१)

२. किस चीज़ को सबसे पहले परमेश्वर ने बनाया? ________________ (३)

३. परमेश्वर ने उजियाले को क्या कहा? ________________ (४,५)

४. अन्धियारे को परमेश्वर ने क्या कहा? ________________ (४,५)

५. और परमेश्वर ने कहा, "जल ________________
हो कि ________________ हो जाए (६)

६. और परमेश्वर ने आ ________________
को बनाया और समुद्रों को दसरे दिन। (७,८)

७. परमेश्वर ने सूखी भूमि का नाम पृ ________________ रखा। (९,१०)

८. फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से ________________
तथा ________________ और फलदाई वृक्ष की ________________
जाति के अनुसार होते हैं, पृथ्वी पर उगें। (११,१२)

भाग दो:

इस पाठ को पढ़कर, और बाइबल अभ्यास करने के पश्चात् इन प्रश्नों के उत्तर दें। पाठ की ओर पुन: न देखें

१. क्या परमेश्वर का जन्म हुआ था? ________________

२. क्या परमेश्वर कभी मरेगा? ________________

३. सृष्टि के प्रथम दिन परमेश्वर ने क्या बनाया? ________________
____

४. सृष्टि के दूसरे दिन परमेश्वर ने क्या बनाया? ________________
____

५. सृष्टि के तीसरे दिन परमेश्वर ने क्या बनाया? ________________
____

पाठ दो पर जांच

भाग एक: बाइबल अभ्यास

प्रस्तुत बाइबल खंड को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दें। आप उत्तर के लिये बाइबल खंड पुन: देख सकते हैं

१. कौन सी दो बड़ी ज्योतियां परमेश्वर ने आकाश में बनाई? ________ (१६)

२. और किस प्रकार की ज्योतियां परमेश्वर ने आकाश में बनाई? ________ (१६)
३. जल में परमेश्वर ने क्या रखा? ________ (२०)
४. आकाश में परमेश्वर ने क्या रखा? ________ (२०)
५. कौन सी अन्तिम चीज़ परमेश्वर ने बनाई? ________ (२६)
६. "तब परमेश्वर ने मनुष्य को ________ के अनुसार बनाया। (२७)
७. क्या परमेश्वर ने सृष्टि को पसन्द किया? ________ (२५)

भाग दो:

इन प्रश्नों के उत्तर के लिये पाठ की ओर पुनः न देखें।

१. क्या परमेश्वर के द्वारा बनाये सभी तारों को आप गिन सकते हैं? ________
२. पांचवे दिन परमेश्वर ने आकाश में ________
को तथा ________
को समुद्रों एवं झील और नदियों में भर दिया।
३. परमेश्वर ने कुछ जानवर बनाये जो आज नहीं हैं। उनके नाम ________
४. परमेश्वर की बनायी कौन सी अन्तिम चीज थी? ________
५. हमारे पास क्या है जो जानवरों के पास नहीं है? यह हमारा एक भाग है जो परमेश्वर के समान दिखता है। यह दिखता नहीं है। यह आ ________ है।

पाठ तीन पर जांच

भाग एक: बाइबल अभ्यास

प्रस्तुत बाइबल खंड को पढ़ कर प्रश्नों के उत्तर दें। आप उत्तर के लिये पुनः बाइबल खंड देख सकते हैं।

१. किस फल को परमेश्वर ने मनुष्य को खाने से मना किया था? ________
________ (२,३)
२. यदि वे उस फल को खाते तो क्या होता? ________
________ (२,३)
३. तब सर्प ने स्त्री से कहा "तुम ________"। (४)
४. क्या स्त्री ने फल खाया? ________ (६)
५. क्या अपने पति को भी उसने कुछ फल दिया? ________ (६)

भाग दो:

इन प्रश्नों के उत्तर के लिये पुनः पाठ की ओर न देखें।

१. कौन दो मनुष्यों की परमेश्वर ने सर्वप्रथम सृष्टि की?
____

२. कौन से बाग में वे रहते थे?

___

३. परमेश्वर ने उन्हें क्या करने से मना किया था?

___

४. शैतान कौन है?

___

५. शैतान ने आदम और हव्वा से क्या कराया?

___

नाम ___
मुहल्ला ___
पी. ओ. ___
जिला ___
राज्य ___

पाठ चार पर जांच

भाग एक: बाइबल अभ्यास

प्रस्तुत बाइबल खंड को पढ़ कर उत्तर दें।

अ. परमेश्वर ने जगत् से कितना प्रेम किया? ___

ब. जो यीशु पर विश्वास करते हैं उसका क्या होता है? "वे ___ न हो परन्तु ___ पाये"।

अ. हमारे लिये स्वर्ग में क्या चीज़ प्रतीक्षा कर रही है? ___

ब. मसीह कब हमें लेने आयेंगे? ___

अ. परमेश्वर हमारी आंखों से क्या पोंछेगा? ___

ब. क्या स्वर्ग में शोक, विलाप और पीड़ा रहेगी? ___

भाग दो:

इन प्रश्नों के उत्तर के लिये पाठ की ओर पुनः न देखें।

१. क्यों आदम और हव्वा ने स्वयं को परमेश्वर से छिपाया?

___

२. आदम के पाप के कारण परमेश्वर ने भूमि से क्या किया?

___

३. क्या आदम और हव्वा बारी में ठहर सके?

___

४. हमारे पापों का मूल्य चुकाने परमेश्वर ने किसे दुनिया में भेजा?

५. क्या यीशु आपका उद्धारकर्त्ता है?

६. क्या यीशु को आपने पहले ही उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण किया है?

पाठ पांच पर जांच

भाग एक: बाइबल अभ्यास

प्रस्तुत खंड को पढ़ें तथा प्रश्नों के उत्तर दें। आप पुनः खंड की ओर देख सकते हैं।

१. उस स्वर्गदूत का क्या नाम था जिसे परमेश्वर ने मरियम के पास भेजा था?
(२६)

२. क्या मरियम स्वर्गदूत को देख कर खुश हुई?
(२९)

३. मरियम से बालक का क्या नाम रखने को कहा गया?
(३१)

४. स्वर्गदूत ने मरियम से कहा कि यीशु "महान ______ कहलायेगा ______" (३२)

५. मरियम से उत्पन्न होने वाला बालक ______ का पुत्र कहलाऐगा
(३५)

भाग दो:

इन प्रश्नों के उत्तर के लिये पाठ की ओर पुनः न देखें।

१. मरियम के पास कौन आया?

२. स्वर्गदूत ने मरियम से क्या कहा?

३. बालक के विषय में क्या विशेषता थी?

४. क्यों आरंभ में मरियम चिन्तित थी?

५. यूसुफ के सामने कौन प्रगट हुआ?

६. स्वर्गदूत ने यूसुफ से क्या करने को कहा?

भाग एक: बाइबल अभ्यास

१. औगुस्तस कैसर की ओर से सारे जगत् में क्या आज्ञा निकली?

______________________________ (१)

२. प्रत्येक को नाम लिखाने को कहां जाना था?

______________________________ (३)

३. यूसुफ को कहां जाना था?

______________________________ (४)

४. वह अपने साथ किसे ले गया?

______________________________ (३)

______________________________ (५)

५. वहां क्या हुआ?

______________________________ (६)

६. मरियम ने बालक यीशु को कहां रखा?

______________________________ (७)

भाग दो:

इन प्रश्नों के उत्तर के लिये पाठ की ओर पुन: न देखें।

१. युसुफ और मरियम क्यों बैतुलहम गये थे?

____

२. लोगों ने युसुफ से क्या कहा जब वह ठहरने का स्थान ढूंढ रहा था?

____

३. अन्त में वे कहां ठहरे?

____

४. उस रात्रि गौशाला में किसका जन्म हुआ?

____

५. यीशु कौन है?

____

६. यीशु के पास किस प्रकार का बिछावन था?

____

नाम ______________________________

मुहल्ला ______________________________

पी. ओ. ______________________________

जिला ______________________________

राज्य ______________________________

भाग एक: बाइबल अभ्यास

प्रस्तुत बाइबल खंड को पढ़ें तथा इन प्रश्नों के उत्तर दें। आप बाइबल खंड को पुन: पढ़ सकते हैं।

१. उस रात्रि गड़ेरिये कहां थे?

_______________________________ (८)

२. उनके समक्ष कौन प्रकट हुआ?

_______________________________ (९)

३. क्या चरवाहे भयभीत थे?

_______________________________ (९)

४. स्वर्गदूत ने उनसे क्या कहा?

_______________________________ (१०)

५. गड़ेरिये बालक यीशु को कहां पाते?

_______________________________ (१२)

६. स्वर्गदूत के साथ कौन मिल गये?

_______________________________ (१३)

७. स्वर्गदूतों के चले जाने पर गड़ेरियों ने क्या किया?

_______________________________ (१५, १६)

८. क्या गड़ेरियों ने यीशु के बारे में सबसे कहा?

_______________________________ (१७)

भाग दो:

इन प्रश्नों के उत्तर के लिये पाठ की ओर पुन: न देखें।

१. यीशु के जन्म के रात पहाड़ों के चारों ओर कौन थे?

____

२. उन पर कौन प्रकट हुआ?

____

३. स्वर्गदूत ने उनसे क्या कहा?

____

४. क्या उस स्वर्गदूत ने अकेले गाना गाया?

____

५. इन स्वर्गदूतों ने क्या गाना गाया?

____

६. गड़ेरियों ने क्या किया?

____

पाठ आठ पर जांच

भाग एकः बाइबल अभ्यास

प्रस्तुत बाइबल खंड को पढ़ें तथा इन प्रश्नों के उत्तर दें। आप बाइबल खंड को पुनः पढ़ सकते हैं।

१. यीशु यरूशलेम जाने के वक्त कितने वर्ष का था?

______________________________ (४१,४२)

२. क्या यीशु अपने माता-पिता से घर लौटा?

______________________________ (४३)

३. क्या उसके माता-पिता ने पहले दिन उसे खोजा? __________ उसके कहां रहने की संभावना कर रहे थे? ______________________________ (४३,४७)

____

४. यीशु को खोजने में कितने दिन लगे?

______________________________ (४६,४७)

५. क्या यीशु के माता-पिता यीशु को न पाकर घबरा गये थे?

______________________________ (४८)

६. यीशु ने अपने माता-पिता से क्या कहा?

______________________________ (४९)

७. क्या उसे उन्होंने समझा?

______________________________ (५०)

भाग दोः

इन प्रश्नों के उत्तर के लिये पुनः पाठ की ओर न देखें

१. बालक यीशु को दण्डवत करने कौन आये?

____

२. उन्होंने यीशु को खोजने के लिये किस चीज का पीछा किया?

____

३. निर्दयी राजा ने क्या किया?

____

४. यीशु कैसे बचा?

____

५. यीशु बारह वर्ष की उम्र में कहां गया था?

____

६. उसके माता-पिता ने उसे कहां पाया?

____

भाग एकः बाइबल अभ्यास

निम्नलिखित बाइबल खण्ड को पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दें। आप पुनः बाइबल खंड को उत्तर देने के लिये देख सकते हैं।

१. वह घर कितना भर गया जिसमें यीशु ठहरा था?

______________________________ (२)

२. चार व्यक्तियों ने यीशु के पास क्या लाया?

______________________________ (३)

३. क्यों वे पहले यीशु तक नहीं पहुंच सके?

______________________________ (४)

४. कैसे वे अपने मित्र को यीशु तक पहुंचा पाये?

______________________________ (४)

५. सर्वप्रथम यीशु ने उस व्यक्ति से क्या कहा?

______________________________ (५)

६. वह कौन व्यक्ति है जो केवल पापों की क्षमा दे सकता है?

______________________________ (७)

७. क्या आप समझते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर हैं?

____

८. यीशु ने यह प्रमाणित करने को कि वे पापों की क्षमा दे सकते हैं क्या किया?

______________________________ (१०,११)

भाग दोः

इन प्रश्नों के उत्तर के लिये पाठ की ओर पुनः न देखें।

१. कभी-कभी यीशु के पीछे चलने वालों की भीड़ कितनी बड़ी हुआ करती थी?

____

२. यीशु ने पतरस की सास के लिये क्या किया?

____

३. यीशु ने कोढ़ी के लिये क्या किया?

____

४. उन चार व्यक्तियों ने अपने मित्र को यीशु तक पहुंचाने के लिये क्या किया?

____

५. यीशु ने पहले उस बीमार व्यक्ति से क्या कहा?

____

६. यीशु ने यह दिखाने को वह परमेश्वर है इस बीमार व्यक्ति से क्या किया?

____

पाठों को इस पते पर वापिस करें।

नाम ____

मुहल्ला ____

पी. ओ. ____

जिला ____

राज्य ____

पाठ दस पर जांच

भाग एक: बाइबल अभ्यास

प्रस्तुत बाइबल खंड को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दें। आप उत्तर के लिये पुनः बाइबल खंड की ओर देख सकते हैं।

१. यीशु ने अपने शिष्यों को किस पर विश्वास रखने को कहा?

____ (१४:१)

२. यीशु अपने शिष्यों के लिये क्या तैयारी कर रहा है?

____ (१४:२,३)

३. पिता परमेश्वर तक पहुंचने के लिये कौन सा मार्ग है?

____ (१४:६,७)

४. सच्ची दाखलता कौन है?

____ (१५:१)

५. दाखलता की डालियां कौन हैं?

____ (१५:५)

६. कौन अधिक फलवन्त हो सकता है?

____ (१५:५)

७. यीशु से अलग होने वाले व्यक्ति को क्या हो सकता है?

____ (१५:६)

भाग दो:

इन प्रश्नों के उत्तर के लिये पाठ की ओर पुनः न देखें:

१. यीशु को कौन मारना चाहता था?

____

२. परमेश्वर पाप से क्या करता है?

___

३. सुसमाचार क्या है?

___

४. शिष्य उदास क्यों थे?

___

५. कैसे आप यीशु के साथ सनातन तक जीवित रहेंगे?

___

६. जब हम यीशु पर विश्वास करते हैं, तब किस तरह का "फल" हमारे जीवनों में दिखलाई देगा?

___

पाठ ग्यारह पर जांच

भाग एक: बाइबल अभ्यास

निम्नलिखित बाइबल खंड को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दें। आप खंड को प्रश्नों के उत्तर के लिये देख सकते हैं।

१. उस तख्ती (पत्र) पर जो यीशु के क्रूस के उपर ठोंका गया था क्या लिखा था?

___ (३८)

२. कैसे एक अपराधी ने चाहा कि यीशु अपने आप को मुक्तिदाता प्रमाणित करे?

___ (३९)

३. दूसरे अपराधी ने क्या चाहा कि यीशु उसके लिये करे?

___ (४२)

४. यीशु ने अपराधी से क्या प्रतिज्ञा की?

___ (४३)

५. यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने पर क्या सूर्य चमका था?

___ (४९)

६. यीशु के मरने पर क्या लोग दु:खी थे?

___ (४८)

भाग दो:

इन प्रश्नों के उत्तर के लिये पाठ की ओर पुन: न देखें।

१. किसने यीशु को पकड़वाया?

___

२. यीशु कौन है यह दिखलाने के लिये यहूदा ने क्या किया?

३. पिलातुस कौन था?

४. उन्होंने न्यायालय में यीशु से क्या किया?

५. यीशु के बगल में कौन मारा गया था?

६. कलवरी पर यीशु की मृत्यु के समय वास्तव में क्या घटना घटित हुई?

इस पद को मुखस्थ करें:

(आपने इसे पहले ही सीखा है) "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, पर अनन्त जीवन पाये"। यूहन्ना ३:१६

पाठ बारह की जांच

भाग एक: बाइबल अभ्यास

निम्नलिखित बाइबल खंड को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दें। आप खंड को प्रश्नों के उत्तर के लिये देख सकते हैं।

१. कौन बड़े सवेरे यीशु के कब्र पर गई? (१)

२. उन्होंने रास्ते में क्या बातचीत की? (३)

३. कब्र पर पहुंचने पर उन्होंने क्या पाया? (४)

४. कब्र के अन्दर जाने पर उन्होंने क्या पाया? (५)

५. स्वर्गदूत ने स्त्रियों को यीशु के विषय में क्या बताया? (६)

६. स्वर्गदूत ने उन्हें दूसरे चेलों को क्या बताने को कहा? (७)

भाग दो:

इन प्रश्नों के उत्तर के लिये पाठ की ओर पुन: न देखें।

१. सैनिकों ने यह दिखाने को कि यीशु मर चुका है क्या किया?

२. यीशु की देह कहां रखी थी?

३. रविवार की सुबह को कौन कब्र पर आया?

४. उन्होंने क्या पाया?

५. स्वर्गदूत ने स्त्रियों से क्या कहा?

६. यीशु अब कहां है?

यीशु फिर से आने वाले हैं! क्या आपने उसे अपना जीवन दिया है? क्या वह आपका उद्धारकर्त्ता है?

क्या आप हमें बतायेंगे?

१. इस पाठ्यक्रम के द्वारा क्या आपने यीशु को अपना मुक्तिदाता ग्रहण किया है? हां नहीं
२. क्या आपने पहले कभी यीशु को अपना मुक्तिदाता ग्रहण किया था? हां नहीं
३. क्या इस पाठ्यक्रम से आपको बाइबल अध्ययन में सहायता मिली? हां नहीं

इन चार जांचों को इस पते पर भेजें (निश्चय कर लें कि क्या आपका नाम सभी जांचों पर लिखा है)।
हम जांचों (परीक्षा पत्रों) की जांच करेंगे और आपको एक डिप्लोमा (प्रमाण पत्र) भेजेंगे।

नाम
मुहल्ला
पी. ओ.
जिला
राज्य

For follow up, please contact:—

THE MOST WONDERFUL BOOK

MADE EASY

हाँ! अब आप बाईबिल की महान सच्चाइयों को समझ सकते हैं। "बाईबिल की महान सच्चाइयों" की प्रति अपने नजदीकी केन्द्र से प्राप्त करें जिसका पता सामने के पृष्ठ पर छपा है।

YES! YOU CAN NOW UNDERSTAND THE GREAT TRUTHS OF THE BIBLE. GET YOUR COPY OF THE "GREAT BIBLE TRUTHS" FROM YOUR SPONSOR.

BARGAIN OFFER

"GREAT BIBLE TRUTHS" WILL BE SUPPLIED TO YOU AT A FRACTION OF ITS ACTUAL COST PLUS POSTAGE.

Seek the Lord while you can find him. Call upon him now while he is near. Let men cast off their wicked deeds; let them banish from their minds the very thought of doing wrong! Let them turn to the Lord that he may have mercy upon them and to our God, for he will abundantly pardon! This plan of mine is not what you would work out, neither are my thoughts the same as yours! For just as the heavens are higher than the earth, so are my ways higher than yours, and my thoughts than yours. As the rain and snow come down from heaven and stay upon the ground to water the earth, and cause the grain to grow and to produce seed for the farmer and bread for the hungry, so also is my Word. I send it out and it always produces fruit. It shall acomplish all I want it to, and prosper everywhere I send it. You will live in joy and peace. The mountains and hills, the trees of the field — all the world around you — will rejoice.

ISAIAH 55:6-12.